09

क्या निराश हुआ जाए

रचनाकार/कवि का परिचय : नाम: हजारी प्रसाद द्विवेदी, जन्म– 1907 ई. **मृत्यु** – 1979 ई.

प्रमुख रचनाएँ–

निबंध : अशोक के फूल, विचार और वितर्क, कल्पलता, आलोक पर्व

उपन्यास : बाणभट्ट की आत्मकथा, चारु चंद्रलेख, पुनर्नवा, अनामदास का पोथा, इतिहास हिंदी साहित्य की भूमिका, हिंदी साहित्य का आदिकाल आलोचना कबीर, सूर–साहित्य आदि।

अधिगम प्रतिफल :

- किसी रचना को पढ़कर उसके सामाजिक मूल्यों पर चर्चा करना, उसके कारण जानने की कोशिश करना।
- पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए समझ के लिए प्रश्न पूछना।
- विभिन्न अवसरों/सन्दर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखना।

© JCERT not to be republished

पाठ का परिचय– हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित 'क्या निराश हुआ जाए' एक श्रेष्ठ निबंध है। इस पाठ के द्वारा लेखक देश में उपजी सामाजिक बुराइयों के साथ–साथ अच्छाइयों को भी उजागर करने के लिए कहते है। वे कहते है समाचार पत्रों को पढ़कर लगता है सच्चाई और ईमानदारी खत्म हो गई है। आज आदमी गुणी कम और दोषी अधिक दिख रहा है। आज लोगो की सच्चाई से आस्था डिगने लगी है। लेखक कहते है कि लोभ, मोह, काम–क्रोध आदि से हार नहीं माननी चाहिए बल्कि उनका डट कर सामना करना चाहिए। आगे वे कहते है कि हमें किसी के हाथ की कठ पुतली नहीं बनना चाहिए। कानून और धर्म अलग–अलग हैं। परन्तु कुछ लोग कानून को धर्म से बड़ा मानते हैं। समाज में कुछ लोग ऐसे हैं जो बुराई को रस लेकर बताते हैं। बुराई में रस लेना बुरी बात है। लेखक के अनुसार सच्चाई आज भी दुनिया में है इसके कई उदहारण उन्होंने पाठ में दिए हैं।

सार संक्षेप

लेखक आज के समय में फैले हुए डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार से बहुत दुखी है। आजकल का समाचार पत्र आदमी को आदमी पर विश्वास करने से रोकता है। लेखक के अनुसार जिस स्वतंत्र भारत का स्वप्न गांधी, तिलक, टैगोर ने देखा था यह भारत अब उनके स्वप्नों का भारत नहीं रहा। आज के समय में ईमानदारी से कमाने वाले भूखे रह रहे हैं और धोखा धड़ी करने वाले राज कर रहे हैं। लेखक के अनुसार भारतीय हमेशा ही संतोषी प्रवृति के रहें हैं। वे कहते हैं आम आदमी की मौलिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कानून बनाए गए हैं किन्तु आज लोग ईमानदार नहीं रहे। भारत में कानून को धर्म माना गया है, किन्तु आज भी कानून से ऊँचा धर्म माना गया है शायद इसीलिए आज भी लोगों में ईमानदारी, सच्चाई है। लेखक को यह सोचकर अच्छा लगता है कि अभी भी लोगों में इंसानियत बाकी है उदहारण के लिए वे रेलवे के टिकट बाबू द्वारा लौटाए गए रूपये वाली घटना की बात बताते हैं। इन उदाहरणो से लेखक के मन में आशा की किरण जागती है और वे कहते हैं कि अभी निराश नहीं हुआ जा सकता। लेखक ने टैगोर के एक प्रार्थना गीत का उदाहरण देकर कहा है कि जिस प्रकार उन्होंने भगवान से प्रार्थना की थी कि चाहे जितनी विपत्ति आए वे भगवान में ध्यान लगाए रखें। लेखक को विश्वास है कि एक दिन भारत इन्ही गुणों के बल पर वैसा ही भारत बन जायेगा जैसा वह चाहता है। अतः अभी निराश न हुआ जाय।

(गद्यांश की व्याख्या – 1)

मेरा मन कभी–कभी बैठ जाता है............................ ऐसी स्थिति में जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था हिलने लगी है। (पृष्ठ संख्या 66)

शब्दार्थ –

ठगी	: चालबाजी	गह्वर	: गड्ढ़ा
तस्करी	: चोरी से सीमा पार माल ले जाने की क्रिया	महा–समुद्र	: महासागर
भ्रष्टाचार	: अनैतिक आचरण	मनीषियों	: ऋषि
आरोप–प्रत्यारोप	: एक–दूसरे को गलत ठहराना	जीविका	: रोजगार
संदेह	: शक	निरीह	: कमजोर

© JCERT not to be republished

दृष्टि	: नजर	श्रमजीवी	: मेहनत करने वाला
दोष	: बुराई	फरेब	: धोखा
गुणी	: अच्छाई	पर्याय	: समानार्थी
संस्कृति	: परम्परा	भीरु	: डरपोक
अतीत	: बीता हुआ समय	बेबस	: लाचार
आस्था	: विश्वास		

व्याख्या

जब भी लेखक समाचार–पत्रों को पढ़ते है,उनका मन उदास हो जाता है क्यूंकि समाचार–पत्रों में चालबाजी, डकैती, चोरी, चोरी से सीमा–पार माल ले जाने की क्रिया की खबरें छपती हैं। इस तरह के कर्म बहुत ही अधिक बढ़ गए है। अनैतिक आचरण, बुरा आचरण समाज में चारों तरफ फैला हुआ है। समाचार पत्र खोलकर देखिए तो आप इन सभी का जिक्र पाएँगे। ऐसा लगता है कि चारो ओर बुराई ही बुराई है अच्छाई का कोई नाम ही नहीं है। एक–दूसरे को गलत ठहराना नजर आता है। ऐसा वातावरण बन गया है कि लगता है देश में कोई ईमानदार आदमी ही नहीं रह गया है, सिर्फ बुराई ही बची है। हर व्यक्ति कानून को अपने हाथ में लेकर बेईमानी और भ्रष्टाचार कर रहा है।

हर व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को शक की नजर से देखता है क्योंकि उसे उस पर विश्वास ही नहीं रह गया है। जो जितने ऊँचे पद पर है उस पर हम विश्वास नहीं कर सकते है क्योंकि उसने कर्म ही ऐसे किये है कि लोग उस पर विश्वास ही नहीं करते है, हमेशा उनके दोष ही दिखाई देते है। जब उनकी किसी के साथ मुलाकात हुई थी, उन्होंने अपने विचार प्रस्तुत किये थे कि इस समय सुखी वही है जो कुछ नहीं करता, अर्थात् किसी भी बात पर अपना पक्ष नहीं रखता या किसी से कोई व्यवहार नहीं रखता वही व्यक्ति इस दुनिया में सुखी है। लोगों को आदत हो गई है व्यक्ति में बुराई खोजने की, उसमें से अच्छाई देखने का नजरिया जैसे समाप्त ही हो गया है। उसके द्वारा किये गए अच्छे काम को ध्यान में न रखकर उसमें अवगुणों को ही बढ़ा–चढ़ाकर दिखाया जाने लगा है। हर व्यक्ति में कोई न कोई दोष है लेकिन उसमें अच्छाईयाँ भी है। हम उन अच्छाईयों को उजागर नहीं कर रहे है सिर्फ बुराईयों को ही बढ़ा–चढ़ाकर कह रहे हैं। ऐसा लगता है जैसे जो दुनिया में लोग हैं उनमें अच्छाई बची ही नहीं है, या तो थोड़ी है या बिलकुल ही नहीं है।

अगर वास्तव में ही दुनिया में, समाज में यही स्थिति देखने को मिल रही है तो चिंता का विषय है। इस पर सोच विचार किया जाना चाहिए। अपने व्यवहार में किसी तरह का बदलाव लाना चाहिए। क्या इसी भारतवर्ष की कल्पना हमारे महान नेताओं ने की थी, जिसका सपना गंगाधर तिलक और महात्मा गाँधी

© JCERT not to be republished

ने देखा था? लेखक ने आजकल भारत की स्थिति के बारे में सवाल उठाया है कि यह गांधी का भारत है, क्या यह गंगाधर तिलक का भारत है। ऐसा लगता है कि पुराने समय में जो इंसानियत मानवता बची थी, जो संस्कृति हमारी बची थी,वो अब कहीं दिखाई नहीं देती है। मदनमोहन मालवीय और ऐसे महान नेताओं का भारतवर्ष आज कहीं अतीत में गहरे गड्ढे में डूब गया मालूम होता है।

लेखक ने एक अन्य प्रश्न उठाया है कि जो हमारा पुरातन भारत था –आर्य समाज, द्रविड़ समाज, हिन्दु और मुसलमान सब भाई भाई की तरह रहते थे, यूरोपीय और भारतीय परम्पराओं की उनके आदर्शों की मिलन–भूमि भारत थी। लेखक को अभी भी बात का विश्वास नहीं है वह कहते है कि क्या यह वही भारत है गाँधी का भारत, तिलक का भारत, जिसकी लोग मिसाल देते थे। उन्हें अभी भी विश्वास नहीं है कि मेरे महान भारत की जो संस्कृति है, सभ्यता है वो बची रहेगी उसका सम्मान बना रहेगा जो हमारे ऋषि मुनियों ने सपना देखा था भारत का वो वैसा है और आगे भी रहेगा। समाज में आस–पास की ईमानदार व्यक्ति पिस रहे हैं अर्थात् ऐसा लगता है कि वह इस समाज में पिसे जा रहे है, शोषण का शिकार हो जा रहे है और धोखे का रोजगार करनेवाले फल–फूल रहे हैं। ईमानदार व्यक्ति को मूर्ख कहा जाता है क्योंकि वह डरपोक है, लाचार है और बेबस है। ऐसी स्थिति में जीवन के बारे में लोगों की जो आस्था जो विश्वास है वो कहीं हिलने लगा है। मनुष्य के जीवन के महान मूल्य–सच्चाई, ईमानदारी पर भरोसा अब डगमगने लगा है।

प्रश्न:

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें–

क. हर व्यक्ति .... की दृष्टि से देखा जा रहा है

ख. उसके सारे........................... भुला दिए जाएँगे और .... को बढ़ा चढ़ाकर दिखाया जाने लगेगा

ग. क्या यही भारतवर्ष है जिसका सपना तिलक और गाँधी ने देखा था?

घ. ईमानदारी को ....का पर्याय समझा जाने लगा है,............................ केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10–20 शब्दों में दें–

क. समाचार पत्रों में किस प्रकार के समाचार भरे रहते हैं?

ख. इस समय में सुखी कौन रहता है?

© JCERT not to be republished

3. आशय स्पष्ट करें –

क. सच्चाई केवल भीरू और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। ....

ख. झूठ और फरेब का रोजगार करनेवाले फल–फूल रहे हैं।.......

(गद्यांश की व्याख्या – 2)

भारत वर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्व नहीं दिया है,.... ...और समाज में उन तत्वों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं जो गलत तरीके से धन या मान संग्रह करते हैं।" (पृष्ठसंख्या– 67–68)

शब्दार्थ –

भौतिक	: सांसारिक	संग्रह	: इकट्ठा करना
चरम	: अंत	परम	: प्यारा
लोभ–मोह	: लालच	काम–क्रोध	: गुस्सा
स्वाभाविक	: स्वतः	विद्यमान	: उपस्थित
प्रधान	: मुख्य	आचरण	: व्यवहार
उपेक्षा	: ध्यान न देना	गुमराह	: रास्ता भटकना
कोटि–कोटि	: अनगिनत	दरिद्रजनों	: गरीब लोग
हीन	: बुरी	उन्नत	: ऊँचा
धर्मभीरु	: अधर्म करने से डरने वाला	त्रुटियों	: गलतियाँ
संकोच	: हिचकिचाहट	पर्याप्त	: उचित
प्रमाण	: सबूत	आध्यात्मिकता	: भगवान से सम्बन्ध रखने वाला
पीड़ा	: दुःख	भ्रष्टाचार	: बुरा आचरण
आक्रोश	: गुस्सा	प्रतिष्ठा	: इज्जत
संग्रह	: इकट्ठा		

© JCERT not to be republished

व्याख्या

प्राचीन भारत में लोग भौतिक सुख सुविधाओं की वस्तुओं को एकत्रित करने में ज्यादा महत्व नहीं देते थे, वे अपने व्यक्ति के गुणों को महत्व देते थे, उसकी अच्छाई को महत्व देते थे, उसकी दृष्टि से मनुष्य के भीतर जो महान आंतरिक गुण स्थिर भाव से बैठा है अर्थात् सच्चाई, अच्छाई और ईमानदारियों की भावना उसके अन्त तक जानी है और यही बात प्रिय लगती है। हम यही देखते है कि व्यक्ति के जाने के बाद उसकी अच्छाईयों को याद किया जाता है उसके कर्म ही उसकी पहचान होते है। उस समय के लोग किसी भी तरह के सांसारिक सुख सुविधाओं की वस्तुओं की संग्रह करने में विश्वास नहीं करते थे बल्कि लोगों के गुणों में विश्वास करते थे उसकी अच्छाई को महत्व देते थे। व्यक्ति के संस्कार–लालच की भावना, काम–क्रोध की भावना उसके व्यवहार में जो झलकती है वह स्वाभाविक रूप से ही मनुष्य के अंदर आते है, पर उन्हें मुख्य शक्ति मान लेना और अपने मन तथा बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना बहुत बुरा व्यवहार है। भारतवर्ष में हमेशा सच्चाई, ईमानदारी जैसे अच्छाईयों को ही महत्व दिया जाता रहा है। उस समय में मनुष्य एक दूसरे के गुणों और उनकी शक्ति में विश्वास रखते थे, उसी के गुणों का गुणगान करते थे, सच्चाई और ईमानदारी के रास्ते पर चलते थे।

जिस तरह से भूखे इंसान को नजर अदांज नहीं किया जा सकता जो भूख उसके अंदर विद्यामन है उसको हम एक तरफा नहीं कर सकते है। बीमार के लिए जितनी दवा जरूरी है उस चीज को हम नजर–अंदाज नहीं कर सकते है। जो अपना रास्ता भटक चुके है गलत राह पर चल निकले हैं, उन्हें ठीक रास्ते पर ले जाने के उपायों को महत्व देना चाहिए। उनकी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। लेखक यही सब समझाना चाह रहे हैं की हमें अच्छाई और सच्चाई के रास्ते पर चलना चाहिए। किसी की बुराईयों को उजागर नहीं करना चाहिए। हमारे देश में जो हजारों गरीब लोग है उनकी बुरी अवस्था को दूर करने के लिए अनेक प्रयास किये गए और कानून बनाए गए हैं चाहे वो कोई भी स्थिति है। कृषि, उद्योग, वाणिज्य, शिक्षा, स्वास्थ्य – हर स्थिति को उन्नत बनाने का, बेहतर बनाने की और सुचारू रूप से लक्ष्य तक पहुँचने के लिए प्रेरित किया है। इन कार्यों में जो भी लोग लगे हुए है यह जरूरी नहीं कि उन सब का मन पवित्र हो, अच्छाई और सचाई के रास्ते पर चले, उनमें भी कहीं न कहीं बेईमानी धोखेबाजी विद्यामान है। वे अपने लोभ–लालच और काम–क्रोध की भावना से ग्रस्त है।

ऐसे लोग अपने जीवन के उद्देश्य को भूल जाते हैं और अपने स्वार्थ के लिए, दूसरे व्यक्ति के सुख–दुख को भी नहीं देखते हैं बल्कि फायदा उठाना चाहते हैं। भारत में कानून को धर्म की ही तरह माना है। आज एकाएक कानून और धर्म में अंतर कर दिया गया है। आज की पीढ़ी के लोग धर्म की अपेक्षा कानून को अधिक अपेक्षा देते है जबकि एक जमाना था जब लोग धर्म के रास्ते पर चलते थे। धर्म अर्थात् सच्चाई, ईमानदारी, परोपकार की भावना से भरे थे और एक दूसरे के लिए कार्य किया करते थे। धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है। कानून में कुछ ऐसे दाव पेच रहते है की लोग दूसरों के साथ धोखा और कानून को अपने हाथ में लेकर अपना स्वार्थ पूर्ण कर

© JCERT not to be republished

सकते है लेकिन धर्म के क्षेत्र में धोखा नहीं दिया जा सकता। जो अर्धम करने वाले लोग है वो कानून में जो छोटी–मोटी गलतियाँ रह गई है उनका लाभ उठाने में जरा सा भी संकोच नहीं करते। वे अपने स्वार्थ को सर्वप्रथम महत्व देते है कि उनका ही फायदा होना चाहिए चाहे दूसरे के साथ अन्याय ही क्यों न हो जाए।

समाज के ऊपरी वर्ग में चाहे जो भी होता हो, भीतर ही भीतर भारतवर्ष अब भी यह अनुभव कर रहा है कि धर्म कानून से बड़ी चीज है। अभी भी भारत में लोग धर्म पर विश्वास रखते है। धर्म कानून से बहुत बड़ी चीज है इस बात को वो महत्व देते है। जो धार्मिक लोग है, जिनमें सेवा भाव है, ईमानदार व्यक्ति है, सच्चाई के रास्ते पर चलते है। वे किसी न किसी दबाव में जरूर आ गए है लेकिन नष्ठ नहीं हुए है। पूरी तरह से उनके अंदर से अच्छाई नष्ट नहीं हुई है वे कम जरूर हुई है। आज भी प्रेम की भावना उसके अन्दर विद्यामन है, स्त्रियों की इज्जत करता है। आज भी दुनिया में ऐसे लोग मौजूद है। हर व्यक्ति इस बात को इस सच्चाई को महसूस करता है कि दुनिया में से सच्चाई अभी खत्म नहीं हुई है, कम अश्वय हुई है। आज भी सच्चाई, ईमानदारी पर चलने वाले लोग मौजूद है। समाचार पत्रों में भ्रष्टाचार, बुराई के प्रति लोगों में गुस्सा है। हम ऐसी चीजों को गलत समझते हैं, हम समझते है जो हो रहा है सब गलत है और समाज में उन तत्वों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं जो गलत तरीके से धन या मान संग्रह करते हैं। यह सब जानते है कि व्यक्ति के अन्दर ईमानदारी, सच्चाई अन्य गुणों का होना बहुत ही जरूरी है यही व्यक्ति के अंत तक जाती है और इन्हीं को याद करते है।

प्रश्न

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें–

क) भारतवर्ष ने कभी भी..................................के संग्रह को बहुत अधिक महत्त्व नहीं दिया है।

ख) भारतवर्ष सदा..................................को धर्म के रूप में देखता आ रहा है।

ग) अब भी सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और..................................के मूल्य बने हुए हैं।

घ) आज भी वह मनुष्य से..................................करता है, महिलाओं का..................................करता हैं, झूठ और चोरी को ....समझता है, दूसरे को पीड़ा पहुँचाने को..................................समझता हैं।

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 50 शब्दों में दें–

क. बुरा आचरण लेखक ने किसे और क्यों कहा है?

ख. भारतवर्ष का क्या प्रयत्न रहा है?

6. आशय स्पष्ट करें–

© JCERT not to be republished

क. लोभ–मोह, काम–क्रोध आदि विचार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं, पर उन्हें प्रधान शक्ति मान लेना और अपने मन तथा बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना बहुत बुरा आचरण है।

ख. "धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है।"

(गद्यांश की व्याख्या – 3)

"दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात नहीं है......................परन्तु यह एक घटना ठगी और वंचना की अनेक घटनाओं से अधिक शक्तिशाली है।" (पृष्ठ सं.– 68–69)

शब्दार्थ –

पर्दाफाश	: भेद खोलना	विनम्रता	: शालीनता
आचरण	: व्यवहार	विचित्र	: अनोखा
उद्घाटित	: उजागर	संतोष	: तस्सल्ली
दोषो द्घाटन	: कमियों को दिखाना	चकित	: हैरान
एकमात्र	: इकलौता	लुप्त	: गायब
कर्तव्य	: फर्ज	अवांछित	: जिसकी इच्छा न की गई हो
उजागर	: प्रकट	लोक–चित्त	: आम जनता को प्रसन्न करने वाला
घटना	: हादसा	उपस्थित	: हाजिर
वंचना	: धोखा		

व्याख्या

लोगों के द्वारा किये गए गलत कर्म का भेद खुलना उनके दोषों को उजागर करना कोई बुरी बात नहीं है। लोगों को सच्चाई से अवगत होना चाहिए। उन्हें भी यह जानकारी होनी चाहिए कि किस तरह का दोष उसने किया है। बुराई तब गलत मालूम होती है जब किसी के आचरण के गलत पक्ष को उजागर करके किसी के द्वारा किये गए व्यवहार के गलत पक्ष को आनंद लेकर उजागर किया जाता है। जिस तरह से लोग दूसरों की बुराई को बढ़ा चढ़ा के बताते हैं, उसी तरह उनकी अच्छाई की तारीफ भी करनी चाहिए। लेकिन लोग ऐसा नहीं करते है। वे बुराई को रस लेकर बताते है लेकिन

© JCERT not to be republished

अच्छाईयों को नजर–अदांज करते है, भूल जाते है ऐसा करना बुरी बात है। ऐसी बहुत सी घटनाएँ होती हैं जिन्हें लोग सहते नहीं। अगर उनकी सराहना हो तो दूसरों का स्वभाव अच्छा हो जाए। एक बार लेखक रेल के द्वारा कहीं जा रहे थे। जब लेखक रेलवे स्टेशन पर पहुँचे उन्होंने टिकट ली तो गलती से दस रूपये के बजाय सौ का नोट दे दिया और जाकर डिब्बे में बैठ गए। लेकिन टिकट बाबू को बैचेनी होने लगी थी और वह हर डिब्बे में लेखक को ढूँढते हुए देख रहे थे कि वह कहाँ है तकि वह उनके पैसे लौटा सके। उनका चहेरा पहचानते हुए वे उपस्थित हुए। टिकट बाबू ने पहचान लिया, टिकट बाबू एक ईमानदार व्यक्ति था। रखने को वो नब्बे रूपये रख सकता था क्योंकि लेखक को तो यह याद ही नहीं था कि उन्होंने कितने पैसे दिए है। लेकिन वह एक सच्चा और ईमानदार व्यक्ति था इसलिए उसने उसके पैसे लौटाने चाहे और नब्बे रूपये वापस कर दिए। अब जाकर उसे संतोष हुआ कि उसने किसी के पैसे ऐसे ही नहीं रखे हैं। लेखक समाचार पत्रों में देखते थे तो ऐसा लगता था कि समाज में सच्चाई और ईमानदारी कहीं बची ही नहीं है और यहाँ पर टिकट बाबू का व्यवहार देखकर उन्हें विश्वास हुआ कि सच्चाई और ईमानदारी अभी भी बची हुई है इसलिए वो हैरान हुए। लेखक को विश्वास है कि अभी भी दुनिया में सच्चाई और ईमानदारी बची हुई है। हमारे आस–पास ऐसी भी कुछ घटनाएँ हो जाती है जिनकी कल्पना भी नहीं की जाती है, परन्तु यह एक घटना ठगी और वंचना की अनेक घटनाओं से अधिक शक्तिशाली है। जब लेखक ट्रेन में यात्रा कर रहे थे और उन्हें टिकट बाबू ने पैसे लौटाए, अपनी सच्चाई और ईमानदारी का सबूत पेश किया। यह सब देखकर लेखक को विश्वास है कि दुनिया में सिर्फ धोखा–धड़ी या भ्रष्टाचार, चोरी–चकारी की घटानाएँ नहीं होती अभी भी लोगों में कहीं न कहीं सच्चाई मौजूद है।

प्रश्न

7. एक शब्द में उत्तर दीजिए–

क. बुराई में रस लेना कैसी बात है?

ख. अच्छी घटनाओं को उजागर करने से लोकचित्त में कैसी भावना जगती है?

ग. सेकेंड क्लास के डब्बे में लेखक को रुपए वापस करने कौन आए?

घ. रुपए लौटाने के बाद टिकट बाबू के चेहरे पर कैसी भावना थी?

8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 50 शब्दों में दें–

क. लेखक ने किसे बुरी बात कहा है और क्यों?

ख. दोषों को प्रकट करने में आनंद लेने को लेखक ने बुरा क्यों बताया है?

© JCERT not to be republished

9. लेखक ने रेलवे स्टेशन की जिस घटना का जिक्र किया है इसी तरह की कोई और घटना यदि आपके साथ घटित हुई है तो अपने पाँच मित्रों के समूह में इसकी चर्चा करें।

(गद्यांश की व्याख्या – 4)

एक बार मैं बस में यात्रा कर रहा था। जीवन में जानें कितनी ऐसी घटनाएं हुई हैं जिन्हें मैं भूल नहीं सकता। (पृष्ठ सं.– 69–70)

शब्दार्थ –

गतंव्य	: वह स्थान जहाँ किसी को पहुँचना हो	निर्जन	: सुनसान
संदेह	: शक	ठिकाना	: जगह
हवाइयाँ उड़ना (मुहावरा)	: डर जाना	कातर मुद्रा	: डरी हुई दशा
व्याकुल	: परेशान	दुर्घटना	: हादसा
कातर	: परेशान	गिड़गिड़ाने	: विनती
उड़ने	: डरजाना		

व्याख्या

लेखक एक और घटना का जिक्र करते है, उनके साथ पत्नी और तीन बच्चे थे। जिस बस में लेखक अपने परिवर साहित यात्रा कर रहे थे वह कुछ खराब थी और उसमें कुछ खराबी के कारण वह रूकद् रूक कर चल रही थी। रास्ते में जंगल पड़ता था सुनसान रास्ता था ज्यादा आवाजाही नहीं थी। बस चलना रूक गई क्योंकि वह खराब थी। यह रात का समय था अंधेरा हो चुका था। जब बस रूक गई तो यात्रियों में घबराहट स्वभाविक थी। कंडक्टर उतर गया और एक साइकिल लेकर चलता बना। जब यात्रियों ने देखा कि कंडक्टर उतर कर अपनी साइकिल लेकर कहीं चला गया है तो उनमें और बैचेनी हो गई। उन्हे शक हो गया कि हमें धोखा दिया जा रहा है। वह तरह–तरह के बाते अपने दिलों दिमाग में सोचने लगे उन्हें लगने लगा कहीं कंडक्टर अभी चोर डकैत अपने साथ ले आएगा और लूट कर या मार कर चले जाएँगे। वह अब तरह तरह के बाते शुरू करने लगे। किसी ने पुरानी घटना का जिक्र किया कि दो दिन पहले इसी तरह एक बस को लूटा गया था। लेखक अपने बारे में कह रहे है कि वे ही एक व्यक्ति था जो अकेला था अपने परिवार के साथ। उनके बच्चे भूख–प्यास से चिल्ला रहे थे। आस–पास कहीं पानी की व्यवस्था नहीं थी। ऊपर से डकैतियों का डर दिल में समा गया था।

© JCERT not to be republished

कुछ नौजवानों ने सोचा कि ड्राइवर तो यहीं है चलो उसे ही जबरदस्ती मार पीटकर पूछा जाए कि आखिर वो क्या चाहता है। ड्राइवर ऐसा करते देख खबरा गया कि यह लोग मेरे साथ क्या कर रहे हैं। लोगों ने उसे पकड़ लिया। दो चार उसे लात–घुसे लगाए। ड्राइवर ने लेखक को अपनी मदद करने के

लिए पुकारा और उन्हें कहाँ कि कंटक्टर कोई उपाय जरूर लेकर आएगा। बस थोड़ी देर में ठीक हो जाएगी या फिर कोई और अन्य साधान के लिए उपास्थित हो जाऐगी, कृप्या कर हमें माफ करें। उन्होंने गुजारिस की लेखक के साथ से कि कृप्या इन लोगों से बचाइए, कहीं यह मुझे मार न डाले। डर तो लेखक को भी लग रहा था लेकिन जैसा कि एक व्यक्ति जोकि चारो तरफ से लोगों से घिरा हुआ है लोग उसे मार रहे थे, पीट रहे थे। ड्राइवर की यह बुरी दशा देकर उन्हें भी उस पर दया आ गई और उन्होंने यात्रियों को समझना शुरू कर दिया की यह मार पिटाई का काम करना ठीक बात नहीं है। यात्री पूरी तरह से डरे हुए थे। कहने लगे इसकी बातों में मत आईए, धोखा दे रहा है क्योंकि कुछ ऐसी घटनाऐ पहले भी हो चुकी थी। कहने लगे कंडक्टर जो साइकिल लेकर निकला है वो अपने डाकुओं मित्रों के साथ मिला हुआ है उनके पास गया है और उन्हें अभी ही लेकर आता होगा। लेखक ने ड्राइवर की मदद की उन्हें मार पीट से बचाया इस सब में डेढ़–दो घंटे बीत गए। लेखक और उनकी परिवार की बुरी हालत हो गयी थी। लोगों ने ड्राइवर को बस से उतारकर एक जगह घेरकर रखा कि यह कहीं भी भाग न जाए। और कुछ मिले न मिले पर ड्राइवर को पकड़ो और मारो पीटो और उसे जान से मार दो।जो लोग ड्राइवर को घेरकर रखे थे, लेखक ने उन्हें रोकने का बहुत प्रयास किया। लेकिन उनकी इस विनती का कोई असर नहीं हुआ। तभी एक नै बस आती दिखी। उसमें कंडक्टर बैठा था। उसने यात्रियों से बस में बैठने को कहा क्यूंकि वह बस खराब हो चुकी थी। कंडक्टर सिर्फ बस ही नहीं लेकर आया था, बच्चों के लिए कुछ पानी और थोड़ा सा दूध लेकर भी आया था। जब कंडक्टर जा रहा था, उसने नजारा देख लिया था कि अंधेरे रात में बच्चे घबराए हुए थे और भूख प्यास से तड़प रहे थे इसलिए उनके लिए दूध लेकर आया था। यात्रियों ने उसका धन्यवाद किया, ड्राइवर से माफी माँगी और बारह बजे से पहले ही सब लोग बस अड्डे पहुँच गए। यह सब घटानाएँ देखकर लेखक को विश्वास हो गया कि दुनिया में अभी भी लोगों में ईमानदारी बची हुई है जैसे कंटक्टर है, टिकट बाबू है, ऐसे ही लोग और भी है। अभी भी ऐसे लोग हैं जो दूसरे का दुख देख नहीं सकते उनकी मदद करने के लिए दौड़े चले जाते हैं।

प्रश्न

10. एक शब्द में उत्तर दीजिए:

क. लेखक के साथ यात्रा में कितने बच्चे थे?

ख. साईकिल से कौन चला गया?

© JCERT not to be republished

ग. किसके चेहरे पर हवाईयाँ उड़ने लगी?

घ. कंडक्टर अड्डे से कैसी बस लाया?

11. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

क. बस के खराब हो कर रुक जाने पर लोगों ने क्या किया?

ख. इस घटना को देखकर लेखक ने क्या सोचा?

ग. हवाइयाँ उड़ना (मुहावरा) का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।

12. लेखक के साथ घटी इस घटना को हाव–भाव के साथ अपने साथियों को पाँच के समूह में सुनाइए।

(गद्यांश की व्याख्या – 5)

ठगा भी गया हूँ, धोखा भी खाया है, परंतु बहुत कम स्थलों पर विश्वासघात नाम की चीज मिलती है। मेरे मन! निराश होने की जरुरत नहीं है। (पृष्ठ सं.– 70–71)

शब्दार्थ –

ठगा	: छला गया	विश्वासघात	: धोखा
कष्टकर	: कष्ट देने वाला	अकारण	: बिना कारण
ढाँढ़स	: तस्सली	संदेह	: शक
विधियाँ	: तरीका	ज्योति	: दीया

व्याख्या

लोगों ने लेखक के साथ धोखा भी किया है, बुरी घटानाएँ भी हुई है अगर उन्हीं को याद करते रहेगें तो यह जीवन कठिन हो जाएगा। जीवन को काटना बहुत मुश्किल हो जाएगा। परन्तु ऐसी घटनाएँ बहुत ही कम ही मिलती है जब लोगों ने बिना कारण सहायता की है। अपना स्वार्थ भूल कर भी आगे बढ़े हो और हमारी मदद की हो ऐसे भी दुनिया में लोग है। जब हमारे मन को निराशा ने घेर लिया तो ऐसे व्यक्ति सामने आए उन्होंने तस्सली भी दिलाई हिम्मत बढ़ाई हमारी कि आगे बढ़ो कोई बात नहीं जो हो गया सो हो गया। ऐसे भी दुनिया में लोग है जो बिना सोचे समझे, बिना लाभ–हानि का विचार

© JCERT not to be republished

किए लोगों की मदद करते हैं। रवींद्रनाथ ठाकुर जी ने अपनी कविता में प्रार्थना करते हुए ईश्वर से प्रार्थना की है कि मेरे जीवन में चाहे लाखों कठानियाँ और परेशानियाँ आई, दुख तकलीफ आई लेकिन उनको कम न कर मुझे सिर्फ इतनी शक्ति देना कि मैं अपने साहस से अपने परिश्रम से सफलता पाऊँ और तुम पर जरा सा संदेह न करूँ। यहाँ ईश्वर पर संदेह न करने की बात की है। ईश्वर में उनका विश्वास बना रहे ऐसी शाक्ति देने की प्रार्थना करते हैं। मनुष्य की बनाई विधियाँ गलत नतीजे तक पहुँच रही हैं तो इन्हें बदलना होगा। मनुष्य की बनाई हुई तरह–तरह के जो तरीके है वो गलत परिणाम ला रहे है तो इन्हें बदलना ही होगा। कुछ परिस्थियों में हम देखते है कि मनुष्य ने जो तौर तरीके बनाए है उनका गलत परिणाम निकल रहा है तो इन्हें बदलना आवश्यक है। अगर उम्मीद नहीं होगी तो किसी का भी जीवन कष्टदायक हो जाएगा। अभी हमारे भारतवर्ष को और तरक्की पानी है और भी साधन और तरीके हैं जिन पर हमें काम करना है। लेखक कहते है कि हे मेरे मन! निराश होने का अब समय नहीं है। हमें प्रयास करने होगें, हिम्मत नहीं हारने की जरूरत है, उम्मीद नहीं छोड़नी है, अभी भी बहुत सी संभावनाएँ बची है।

प्रश्न

13. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

क. ठगा भी गया हूँ, धोखा भी खाया है, परंतु बहुत कम स्थलों पर............................ नाम की चीज मिलती हैं।

ख. हे प्रभो! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं तुम्हारे ऊपर............................न करूँ।

ग. मनुष्य की बनाई विधियाँ गलत नतीजे तक पहुँच रही हैं तो इन्हें............................होगा।

घ. मेरे............................! निराश होने की जरूरत नहीं है।

14. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

क. लेखक किस प्रकार की घटनाओं को याद रखने की बात कर रहे हैं?

ख. गुरुदेव रविन्द्रनाथ ठाकुर ने अपने प्रार्थना–गीत में इश्वर से क्या प्रार्थना की है?

15. लेखक ने लेख का शीर्षक 'क्या निराश हुआ जाए' क्यों रखा होगा? क्या आप इससे भी बेहतर शीर्षक सुझा सकते हैं?

© JCERT not to be republished

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

प्र० 16. दोषों का पर्दाफाश करना कब बुरा रूप ले सकता है?

प्र० 17. आजकल के बहुत से समाचार पत्र या समाचार चैनल दोषों का पर्दाफाश कर रहे हैं। इस प्रकार समाचारों और कार्यक्रमों की सार्थकता पर तर्क सहित विचार लिखिए?

प्र.18. यदि 'क्या निराश हुआ जाए' के बाद कोई विराम चिह्न लगाने के लिए कहा जाए तो आप दिए गए चिह्न में से कौन–सा चिन्ह लगाएँगे? अपने चुनाव का कारण भी बताइए। –, । .. ! ? य – .... ।

प्र.19. दो शब्दों के मिलने से समास बनता है। समास का एक प्रकार है– द्वंद समास। इसमें दोनों शब्द प्रधान होते हैं। जब दोनों भाग प्रधान होंगे तो एक–दूसरे में द्वंद (स्पर्धा, होड़) की संभावना होती है। कोई किसी से पीछे रहना नहीं चाहता, जैसे– चरम और परम = चरम–परम, भीरू और बेबस = भीरू– बेबस, दिन और रात = दिन–रात।

और के साथ आए शब्दों के जोड़े में और हटाकर (–) योजक भी लगाया जाता है। कभी–कभी एक साथ भी लिखा जाता है। द्वंद समास के 12 उदाहरण ढूँढकर लिखिए।

प्र.20. पाठ से व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक संज्ञाओं के उदाहरण खोजकर लिखिए।

बहुवैकल्पिक प्रश्न

प्र. 21. क्या निराश हुआ जाए (निबंध) के लेखक कौन हैं?

क. बंशीधर श्रीवास्तव

ख. ज्ञानरंजन

ग. हजारीप्रसाद द्विवेदी

घ. प्रेमचंद

© JCERT not to be republished

प्र. 22. समाचार–पत्रों में अधिकतर समाचार कैसे होते हैं?

क. साहित्य से जुड़े

ख. ज्ञान देने वाले

ग. ठगी, डकैती, चोरी, भ्रष्टाचार आदि के

घ. प्रेरणादायक घटनाओं से सम्बंधित

प्र. 23. आजकल कैसे लोग फल–फूल रहे हैं?

क. झूठे तथा फरेबी लोग

ख. ईमानदार लोग

ग. स्पष्ट वक्ता

घ. कामचोर

प्र. 24. टिकट बाबू के चेहरे पर संतोष की गरिमा क्यों थी?

क. क्योंकि उसने धोखे से आए लेखक के पैसे लौटा दिए थे

ख. उसने लेखक को पहचान लिया था

ग. वह एक संतोषी जीव था

घ. वह लेखक के लिए टिकट लाया था

प्र. 25. हमें कैसी बातों को याद रखना चाहिए?

क. बुरी बातों को

ख. लोभ वाली बातों को

ग. अच्छी बातों को

घ. मतभेद संबंधी बातों को

© JCERT not to be republished

प्र. 26. निम्नलिखित में किन्हें जीवन मूल्य नहीं माना जाता

क. लोभ

ख. ईमानदारी

ग. सेवा

घ. आध्यात्मिकता

प्र.27. बस का कंडक्टर बच्चों के लिए क्या लेकर आया?

क. बिस्कुट

ख. फल

ग. दध

घ. पानी

प्र. 28. बस गंतव्य से कितने किलोमीटर पर खराब हो गई?

क. पाँच

ख. आठ

ग. तीन

घ. दस

प्र. 29. भारतवर्ष के लोग कैसी वस्तुओं के संग्रह को महत्व नहीं देते थे?

क. कीमती

ख. मूल्यवान

ग. बहुमूल्य

घ. भौतिक

© JCERT not to be republished

प्र. 30. भ्रष्टाचार के प्रति आक्रोश के क्या कारण हैं?

क. लोगों की हताशा

ख. समाज विरोधी कार्यों को गलत समझना

ग. जीवन की असफलताएँ

घ. धर्म को कानून समझना

प्र. 31. लेखक ने किस बात को बुरा कहा है?

क. दोषों को बेपर्दा करने को

ख. दूसरों के दोषों में रस लेने को

ग. दूसरों के दोष दर करने को

घ. दूसरों की अच्छाइयों को उजागर करना

प्र. 32. जीवन कष्टकारक कब होता है?

क. जब सोच सकारात्मक होती है

ख. जब सोच नकारात्मक होती है

ग. जब व्यक्ति दिनभर सोचता है

घ. जब व्यक्ति कर्म के फल के बारे में सोचता है

प्र. 33. कवि टैगोर ने ईश्वर से क्या चाहा है?

क. शक्ति

ख. वैभव

ग. ईश्वर पर संदेह न करने की शक्ति

घ. अच्छा स्वास्थ्य

© JCERT not to be republished

प्र. 34. किस चीज को बदलने की जरूरत है?

क. मनुष्य की बनाई विधियों को

ख. भाग्य को

ग. व्यवसाय को

घ. लोगों की सोच को

प्र. 35. लेखक किस बात पर बल देते हैं?

क. निरोग रहने की

ख. दूसरों की सेवा करने की

ग. मन को पवित्र बनाने की

घ. मन की निराशा को दूर करने की

पाठ्यपुस्तक से प्रश्नोत्तर

प्र.1. : लेखक ऐसा क्यों कहता है कि हर व्यक्ति संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है?

उत्तर : लेखक कहते हैं कि हर व्यक्ति संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है क्योंकि आज समाज में आरोप– प्रत्यारोप का कुछ ऐसा वातावरण बन गया है कि जैसे देश में कोई ईमानदार आदमी ही नहीं रह गया है। जो जितने ऊँचे पद पर हैं उनमें उतने ही अधिक दोष खोजकर दिखाए जा रहे हैं, जैसे इनमें कोई गुण ही न हों।

प्र. 2. : लेखक ने स्वीकार किया है कि लोगों ने उन्हें भी धोखा दिया है फिर भी वह निराश नहीं है। आपके विचार से इस बात का क्या कारण हो सकता है?

उत्तर : लेखक आशावादी दृष्टि कोण के हैं। उन्हें लगता है कि जब तक देश में कहीं न कहीं थोड़ी बहुत भी सच्चाई और ईमानदारी है तब तक यह गुंजाइश भी है कि वह अपने सपनों का भारत अभी भी पा सकते हैं। इसलिए लेखक धोखा खाने पर भी निराश नहीं होते हैं।

© JCERT not to be republished

प्र. 3. : जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था क्यों हिलने लगी है?

उत्तर : जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था इसलिए हिलने लगी है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलानेवाले निरीह और भोले भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा फरेब का रोजगार करने वाले फल–फूल रहे हैं। ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है, सच्चाई केवल भीरू और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है।

प्र. 4. : किन बातों से पता चलता है कि धर्म एवं आध्यात्मिकता के मूल्य दब गए हैं?

उत्तर : भारत में आज भी अधिकांश लोगों में सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और आध्यात्मिकता के प्रति लगाव है। समाज के उच्च वर्ग को यदि छोड़ दिया जाए तो आज भी भारत में मनुष्य मात्र के प्रति प्रेम, महिलाओं को सम्मान, झूठ और चोरी को गलत समझना आदि मूल्य विद्यमान हैं, वे दब अवश्य गए हैं किन्तु समाप्त नहीं हुए हैं। धर्म को कानून से बड़ा समझा जाता है, लोग धर्म के विरुद्ध नहीं जाते हैं। हाँ, कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते।

प्र. 5. : किसी एक घटना का वर्णन करें जिससे लेखक को यह पता चलता है कि दुनिया से सच्चाई और ईमानदारी लुप्त नहीं हुई है।

उत्तर : "एक बार लेखक ने रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए गलती से दस के बजाए सौ रूपये का नोट दिया और जल्दी–जल्दी गाड़ी में आकर बैठ गया। थोड़ी देर में टिकट बाबू, उन दोनों के सेकेंड क्लास के डिब्बे में हर आदमी का चेहरा पहचानते हुआ उपस्थित हुए। उसने लेखक को पहचान लिया और बड़ी विनम्रता के साथ हाथ में नब्बे रूपये रख दिए और बोला गलती हो गई थी। आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा।" उसके चेहरे पर विचित्र संतोष की गरिमा थी। इस घटना से लेखक ने यह अनुभव किया कि दुनिया से सच्चाई और ईमानदारी लुप्त नहीं हुई है।

प्र. 6. : कविवर रविंद्रनाथ ठाकुर ने अपने प्रार्थना–गीत में ईश्वर से क्या प्रार्थना की है?

उत्तर : कविवर रविन्द्रनाथ ठाकुर ने अपने प्रार्थना–गीत में ईश्वर से यह प्रार्थना की है कि संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े तो ऐसे अवसरों पर भी हे प्रभो! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं तुम्हारे ऊपर संदेह न करूँ।

भाषा–संदर्भ

1. दो शब्दों के मिलने से समास बनता है। समास का एक प्रकार है– द्वंद्व समास। इस समास में दोनों शब्द प्रधान होते हैं। ये दोनों शब्द योजक चिह्न (–) से जुड़े होते हैं। द्वंद्व समास का विग्रह करने पर योजक चिह्न की जगह और, या, एवं, अथवा लगता है। जैसे–

© JCERT not to be republished

लाल–पीला = लाल और पीला

आगे–पीछे = आगे एवं पीछे

खरा–खोटा = खरा या खोटा

ठंडा–गरम = ठंडा अथवा गरम

पाठ से द्वंद्व समास के उदाहरण ढूँढकर लिखिए।

उत्तर

आरोप–प्रत्यारोप = आरोप और प्रत्यारोप

भोले–भाले = भोले और भाले

लोभ–मोह = लोभ और मोह

काम–क्रोध = काम और क्रोध

कायदे–कानून = कायदे और कानून

मारने–पीटने = मारने और पीटने

2. "मैं भी बहुत भयभीत था पर ड्राईवर को किसी तरह मार–पीट से बचाया।"

ऊपर की पंक्ति में 'बहुत' शब्द 'भयभीत' शब्द का विशेषण है। 'भयभीत' भी एक विशेषण है। 'बहुत' शब्द यहाँ 'भयभीत' की विशेषता बता रहा है। 'बहुत' एक प्रविशेषण है। इस प्रकार, जो शब्द किसी विशेषण की विशेषता बताए उसे प्रविशेषण कहते हैं।

निम्नलिखित वाक्यों में से प्रविशेषण चुनकर लिखिए–

क. वह बड़ी धीमी आवाज में बोलता है।

ख. आप बड़े अच्छे वक्ता हैं।

प्रविशेषण का प्रयोग करते हुए तीन वाक्य बनाइए

उत्तर क. बड़ी, ख. बड़े

© JCERT not to be republished

प्रविशेषण का प्रयोग करते हुए तीन वाक्य–

1. बस बहुत तेज चल रही थी।

2. भोजन बड़ा स्वादिष्ट है।

3. मेरे पास कविता की लगभग दो दर्जन पुस्तकें हैं।

पाठ्यपुस्तक से प्रश्नोत्तर

1. क. संदेह, ख. गुण, दोषों ग. तिलक, गाँधी घ. मूर्खता, सच्चाई।

2. क. समाचार पत्रों में ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी, और भ्रष्टाचार के समाचार भरे रहते हैं।

ख. इस समय में सुखी वही रहता है जो कुछ नहीं करता।

3. क. उत्तर– लेखक कहता है कि आज इस छल–कपट की दुनिया में ईमानदारी का कोई स्थान नहीं रह गया है। ईमानदार व्यक्ति को मूर्ख समझा जाने लगा है। जो व्यक्ति बेईमान है उन्हें ईमानदार समझा जाने लगा है। छल–कपाट करने वाले समझते हैं कि वही व्यक्ति सच्चाई का पल्ला पकड़ कर बैठे हैं जो डरपोक और आश्रयहीन है तथा जिनकी ऊंची पहुंच नहीं है। परिणाम यह होगा कि कमजोर व्यक्ति की समाज में स्थिति अधिक खराब हो जाएगी।

ख. उत्तर– यह सत्य है कि झूठ और फरेब का रोजगार करने वाले फल–फूल रहे हैं। इसका परिणाम यह निकल रहा है कि झूठे, धोखेबाज एवं मूर्ख मनुष्य जीवन में गति कर रहे हैं। वह सुख ऐश्वर्य प्राप्त कर आनंदित हो रहे हैं, जबकि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले भोले–भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं। उनका जीवन अंधकार की ओर खोने लगा है। उनकी ईमानदारी बेईमानों की दुनिया में उनके लिए गले की फांस बन गई है। अब ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है। सच्चाई तो अब केवल भीरू और असहाय लोगों के पास ही पड़ी हुई है। ऐसी स्थिति में जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था हिलने लगी है। इसका परिणाम यह होगा कि आपसी विश्वास कम होने लगेगा। किसी को भी किसी पर भरोसा नहीं होगा, फिर चाहे वह अपना हो या पराया।

© JCERT not to be republished

4\. क. भौतिक वस्तुओं

ख. कानून

ग. आध्यात्मिकता

घ. प्रेम, सम्मान, गलत, पाप

5 क. लोभ–मोह, काम–क्रोध आदि की भावना से जीवन यापन करना बुरा आचरण कहलाता है। क्योंकि इनसे मनुष्य केवल स्वार्थ की भावनाएँ ही सीखता है, वह समाज के लिए कोई कार्य नहीं कर सकता।

ख. भारतवर्ष का प्रयत्न रहा है कि मनुष्य के स्वाभाविक गुण, लोभ, मोह, अहंकार, आदि का नियंत्रण में किया जाए। इन्हें कभी शक्ति के रूप में ग्रहण नहीं करना चाहिए।

6\. क. व्यक्ति के संस्कार जैसे लालच की भावना, काम–क्रोध की भावना उसके व्यवहार में जो झलकती है वह स्वाभाविक रूप से ही मनुष्य के अंदर आते है, पर उन्हें मुख्य शक्ति मान लेना और अपने मन तथा बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना बहुत बुरा व्यवहार है। ये भावनाएँ प्रधान नहीं हैं और इनपर विजय प्राप्त किया जा सकता है।

7\. क. बुरी

ख. अच्छी

ग. टिकट बाबू

घ. संतोष

8 क. किसी के आचरण की कमियों को प्रकट करना तो सही है लेकिन यदि उन कमियों को प्रकट करते हुए उनमें आनंद लिया जाने लगे तो वह बुरा हो जाता है। ऐसे में दोषों का निवारण नहीं हो पाता। इसलिए लेखक ने दोषों के उद्‌घाटन में रस लेने को बुरी बात कहा है।

ख. दोषों को प्रकट करने में आनंद लेने को लेखक ने बुरा बताया है क्योंकि ऐसा करने से सिर्फ दोष निकाले जाते हैं, वह अपने–आप में हीन भावना का शिक्सर होते हैं। समाज में उन्हें अपना अस्तित्व तुच्छ लगने लगता है। ऐसे में दोषों का निवारण भी नहीं हो पाता।

© JCERT not to be republished

9. क. तीन

ख. कंडक्टर

ग. ड्राइवर

घ. नई

10.क. जब बस रूक गई तो यात्रियों में घबराहाट स्वभाविक थी। कंडक्टर उतर गया और एक साइकिल लेकर चलता बना। जब यात्रियों ने देखा कि कंडक्टर उतर कर अपनी साइकिल लेकर कहीं चला गया है तो उनमें और बैचेनी हो गई। उन्हे शक हो गया कि हमें धोखा दिया जा रहा है। वह तरह–तरह के बाते अपने दिमाग में सोचने लगे उन्हें लगने लगा कहीं कंडक्टर अभी चोर डकैत अपने साथ ले आएगा और लूठ कर या मार कर चले जाएँगे। वह अब तरह तरह के बाते शुरू करने लगे। उन्होंने ड्राइवर को बंधक बना लिया और मारपीट करने की सोचने लगे।

ख. इस घटना को देखकर लेखक को विश्वास हो गया कि दुनिया में अभी भी लोगों में ईमानदारी बची हुई है जैसे कंटक्टर है ऐसे ही लोग और भी है। अभी भी ऐसे लोग हैं जो दूसरे का दुख देख नहीं सकते उनकी मदद करने के लिए दौड़े चले जाते हैं।

ग. झूला जैसे ही ऊपर गया मेरे चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं।,

11.क. विश्वासघात

ख. संदेह

ग. बदलना

घ. मन

12.क. लेखक उन घटनाओं को याद रखने की बात कर रहे हैं जब लोगों ने अकारण सहायता की है, निराश मन को तस्सली भी दिलाई, हिम्मत बढ़ाई कि आगे बढ़ो कोई बात नहीं जो हो गया सो हो गया।

ख. कविवर रविंद्रनाथ ठाकुर ने अपने प्रार्थना–गीत में ईश्वर से प्रार्थना की है कि संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े तो ऐसे अवसरों पर भी हे प्रभो! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं तुम्हारे ऊपर संदेह न करूँ।

© JCERT not to be republished

13.उत्तर : 'क्या निराश हुआ जाए' पाठ के शीर्षक में पूरी तरह सार्थकता है। आज के युग में समाचार–पत्रों में भ्रष्टाचार, बेईमानी आदि के समाचारों को पढ़कर हमें निराश नहीं होना चाहिए। समाज में अभी भी सच्चाई और इमानदारी है तथा मनुष्यता समाप्त नहीं हुई है। रेल टिकट बाबू और कंडक्टर जैसे लोग समाज में अभी भी विद्यमान है। मनुष्य की बनाई गई नीतियों को बदलकर महान भारत को पुनः पाया जा सकता है। आशा की ज्योति बुझी नहीं है, अतः निराश होने की आवश्यकता नहीं है।

वैसे इसके अनेक शीर्षक हो सकते हैं–

1. मन मेरे निराश न होना।

2. अभी आस बाकी है।

14.उत्तर : दोषों का पर्दाफाश करना तब बुरा रूप ले लेता है जब किसी के आचरण के गलत पक्ष को बढ़ा–चढ़ा कर दिखाया जाता है और उसमें रस लिया जाता है।

15.उत्तर : दोषों का पर्दाफाश करना उचित है किन्तु जब मीडिया कर्मी किसी स्वार्थ वश या चैनल और अखबार को प्रचारित करने के लिए खबर को उलटा–सीधा रूप देकर प्रस्तुत करते हैं तब यह पर्दाफाश आम लोगों के लिए बुराई का रूप धारण कर लेता है। समाचार तभी सच्चे और अच्छे हो सकते हैं जब उन मे सार्थकता होती या पक्ष को सही रूप में प्रस्तुत किया जाए।

16.उत्तर : यदि 'क्या निराश हुआ जाए' के पीछे विराम चिह्न लगाने के लिए कहा जाए तो मैं '?' का चिह्न लगाउँगी। इसका मुख्य कारण यह है कि क्या निराश हुआ जाए में एक प्रश्न उठता है कि जीवन में सहसा ऐसा क्यों हो गया है कि जीवन में निराश होना पड़े। यह भी कह सकते हैं कि ऐसा वातावरण बन गया हो और कोई पूछ रहा हो कि इस समय हमें निराश होना चाहिए। अतः मेरे विचार से '?' (प्रश्नवाचक) विराम चिह्न यहाँ पर उपयुक्त है।

17. उत्तर –

(i) रुपया – पैसा = रुपया और पैसा

(ii) अपना – पराया = अपना और पराया

(iii) हानि – लाभ = हानि और लाभ

(iv) नर – नारी = नर और नारी

© JCERT not to be republished

(v) माँ – बाप = माँ और बाप

(vi) दाल – रोटी = दाल और रोटी

(vii) लोटा – डोरी = लोटा और डोरी

(viii) घी – शक्कर = घी और शक्कर

(ix) लव – कुश = लव और कुश

(x) गंगा – यमुना = गंगा और यमुना

(xi) अन्न – जल = अन्न और जल

(xii) सुख – दुख = सुख और दुख

18. उत्तर–

व्यक्तिवाचक संज्ञा : तिलक, रविंद्रनाथ ठाकुर, भारतवर्ष, मदनमोहन मालवीय, धर्मवीर।

जातिवाचक संज्ञा : यात्री, नौजवान, समाचार–पत्र, महिला, बस, मनुष्य।

भाववाचक संज्ञा : प्रेम, मनुष्यता, सच्चाई, अच्छाई, ईमानदारी, मूर्खता, यूरोपिय, डकैती, आध्यात्मिकता, विनम्रता।

पाठ्यपुस्तक से प्रश्नोत्तर

21. (ग) हजारीप्रसाद द्विवेदी

22. (ग) ठगी, डकैती, चोरी, भ्रष्टाचार आदि के

23. (क) झूठे तथा फरेबी लोग

24. (क) क्योंकि उसने धोखे से आए लेखक के पैसे लौटा दिए थे

25. (ग) अच्छी बातों को

© JCERT not to be republished

26. (क) लोभ

27. (ग) दूध

28. (ख) आठ

29. (घ) भौतिक

30. (ख) समाज विरोधी कार्यों को गलत समझना

31. (ख) दूसरों के दोषों में रस लेने को

32. (ख) जब सोच नकारात्मक होती है

33. (ग) ईश्वर पर संदेह न करने की शक्ति

34. (क) मनुष्य की बनाई विधियों को

35. (घ) मन की निराशा को दूर करने की

© JCERT not to be republished